एक रचनाशील शिक्षक की निर्मिति

शिक्षक मिहिर से निधि गुलाटी की बातचीत

शिक्षा हमें सक्षम और आत्मनिर्भर बनाती है, पर कभी-कभी शिक्षा का रूढ़ और परम्परागत ढाँचा किसी के लिए बाधा बन जाता है। ऐसे में व्यक्ति वैकल्पिक रास्तों से अपने सीखने के अवसर ख़ुद बनाता और तलाशता है। इस क्रम में वह शिक्षा के साथ-ही-साथ अपने जीवन, समाज और दूसरों के सीखने के महत्त्व को भी नए सिरे से पहचानता चलता है। ऐसे ही एक जुझारू, नवाचारी युवा मिहिर से निधि गुलाटी ने बातचीत कर उनकी ख़ुद से सीखने सम्बन्धी यात्रा की पड़ताल की है। सं.

मिहिर से पहली बार बातचीत करें तो उनके काम और विचारों की विस्तृतता आपको हैरान कर देती है। वे बहुत ही सरलता से, तकनीकी के इस्तेमाल, मानसिक उपकरणों, सृजनात्मक नाटकों का बच्चों के साथ प्रयोग और गहन दर्शनशास्त्र– इन सभी विषयों के बारे में अपनी समझ साझा करते हैं। मिहिर कभी वातावरण पर गीत गाने लगते हैं और ऐसा करते-करते कभी सामाजिक स्थितियों और कभी मानवीय परिस्थितियों पर सटीक सवाल पूछते हैं।

मुझे लगता है कि मिहिर एक तरह का आश्वासन खोज रहे होते हैं, जो स्थितियों और चीज़ों की अपरिचितता से आता है। एक तरह की समझ कि चीज़ें हमेशा उस तरह की नहीं होती हैं जैसा उन्हें होना चाहिए। यह भी कि जीवन एक तरह से न ख़त्म होने वाली सम्भावनाओं से परिपूर्ण है। उनमें एक खुलापन है, जो उन्हें परिस्थितियों और अनुभवों से प्रभावित होने देता है। साथ ही, आकांक्षाओं की निरर्थकता को समझ लेने से, वे उनसे मुक्त हो पाते हैं। इन आकांक्षाओं का सामना करना शायद काफ़ी मुश्किल काम है, क्योंकि ये सामाजिक सम्बन्धों और संस्थानों से बँधी रहती हैं। वैसे भी कि एक तय रास्ते पर चलने से ज़िन्दगी के काफ़ी झमेलों से छुटकारा तो मिल ही जाता है।

आज के ग्रामीण सन्दर्भ में एक युवा शिक्षक होना कैसा होता है, इस बात से तो सिर्फ़ हम मिहिर के बारे में बातचीत की शुरुआत ही कर सकते हैं। दरअसल, उनसे बातचीत करने के पीछे मेरी मंशा कुछ गहरी है। पिछले काफ़ी सालों से मैं शिक्षक शिक्षा से जुड़ी हूँ। अपने विद्यार्थियों को मैंने शिक्षक शिक्षा के कार्यक्रम में धीरे-धीरे बदलते और समझ बनाते देखा है, मानो एक प्याज़ का छिलका उतरता गया हो। कार्यक्रम के चार सालों में वे बच्चों के प्रति संवेदनशील होते चले जाते हैं, और उन्हें बच्चों की बातों में गहरी दिलचस्पी होने लगती है। वे बच्चों की बात को सुनने लगते हैं, अपने सामाजिक सन्दर्भ को समझने लगते हैं, और सामाजिक राजनीति में भागीदारी करने लगते हैं।

अकसर मेरे जैसे शिक्षक प्रशिक्षकों को यह दुविधा रहती है कि एक शिक्षक की रचना कैसे होती है? शोधों में भी इस विषय पर कई बार सवाल उठाए गए हैं। क्या बच्चों में दिलचस्पी लेना, पढ़ाने का शौक़ होना, चिन्तन-मनन करना कुछ व्यक्तियों के स्वभाव में ही होता है? या फिर यह क्षमताएँ प्रशिक्षण से विकसित की जा

सकती हैं? क्या बिना पेशेवर प्रशिक्षण के भी एक सृजनशील, मननशील शिक्षक बन सकते हैं? किसी एक विषयवस्तु के व्यवस्थित शिक्षण-प्रशिक्षण के बिना, क्या सोच और समझ के दायरे विस्तृत हो पाते हैं या और भी संकुचित हो जाते हैं? इन सवालों के कोई सटीक जवाब नहीं हैं। मिहिर अब समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर हो गए हैं। उनका उद्देश्य बच्चों और वयस्कों का एक ऐसा समुदाय बनाने का है, जहाँ सब अपने बारे में और दुनिया से अपने रिश्ते के बारे में समझ बनाने की कोशिश कर पाएँ।

सवाल : अपने बारे में कुछ बताएँ?

मिहिर : मैं गुजरात के पदरा से हूँ। पदरा एक छोटा कस्बा है। मैं स्कूल में अपना मन लगा ही नहीं पाया। मुझे लगता था कि सीखने के और भी बेहतर तरीक़े हो सकते हैं। दसवीं कक्षा के बाद ही मैंने देशभर में फैले अलग-अलग वैकल्पिक शिक्षा के संस्थानों में काम करना शुरू कर दिया। दसवीं के इम्तिहान के बाद मैं वड़ोदरा गया और सोचा कि प्रोग्रामिंग सीखूँगा। यह सीखने की फ़ीस 60,000 रुपए थी, जो मेरे पास नहीं थे।

इसी दौरान एक कम्पनी ने कहा कि आप हमारे लिए मार्केटिंग कीजिए और हम आपको 10% कमीशन देंगे और आपको एक डेवलपर के साथ सीखने का मौक़ा भी देंगे। इस तरह मैंने डिवेलपिंग का काम सीखा, और वेबसाइट बनाना शुरू कर दिया। फिर मैंने पिताजी के कहने पर ग्यारहवीं में प्रवेश लिया और उन्हीं के कहने पर विज्ञान विषय लिया जीव विज्ञान के साथ। मैं हफ़्ते में एक दिन स्कूल जाता था और बाक़ी समय ऑफ़िस का काम करता था। इसी दौरान मैंने e–learning का सॉफ़्टवेयर बनाया– Learnapt.com जिसमें कला (Art), शिक्षाशास्त्र (Pedagogy) और तकनीकी का समागम था। एनसीईआरटी के छठी कक्षा से दसवीं कक्षा तक के सभी विषयों को समझने-सीखने की सामग्री हमने एकत्रित की। विज्ञान में गीत, कहानियाँ, बाहर और अन्दर खेलने वाले खेल, प्रयोग, प्रयोगशाला, मैदान में की जाने वाली गतिविधियाँ, चर्चा और विमर्श के मुद्दे, तरह-तरह की शिक्षण सामग्री एकत्रित कर इस वेबसाइट पर उपलब्ध कराई। इसके साथ बहुविकल्पी बौद्धिक क्षमताओं के आधार पर एक परीक्षण भी बनाया।

बच्चों के साथ काम करने का यह मेरा पहला अनुभव था। फिर हम पदरा और उसके आसपास के गाँवों के बच्चों के लिए अरविंद गुप्ता के खिलौनों की कार्यशालाएँ करने लगे। मैं पैसे भी कमाने लगा था। कमाए हुए पैसे का इस्तेमाल मैं विभिन्न संस्थानों में जाने के लिए करता। किताबें ख़रीदने लगा। अलग-अलग प्रोजेक्ट्स करने लगा। नए-नए विचार मेरे दिमाग़ में आते और मैं उनपर काम करता। जैसे– मैंने बच्चों के सवालों के लिए एक हेल्प लाइन भी बनाई, जिसका नाम था– 'मुझसे कुछ भी पूछो'। मैं तो अपने स्कूल में प्रश्न नहीं पूछ पाता था। इसलिए इस सुविधा को मैं बच्चों के लिए उपलब्ध कराना चाहता था। बच्चे बहुत-से लाजवाब सवाल पूछते थे। जैसे एक सवाल जो मुझे याद है– एक बच्चे ने एक बार पूछा कि जब काग़ज़ जलाते हैं तो उसमें आग कैसे लगती है? क्या बदलाव आते हैं जिससे वह आग पकड़ लेता है? बतौर शिक्षक मैं प्रश्नों और परोक्ष संकेतों द्वारा बच्चों को सोचने और शोध के और मौक़े देता, और बच्चे बहुत-से मज़ेदार उत्तर ढूँढ़कर लाते।

इसी दौरान मुझे मुनि सेवा आश्रम में वॉलेंटियरशिप करने का मौक़ा मिला। वहाँ बायोगैस बॉटलिंग प्लांट, सौर ऊर्जा पर चलता वातानुकूलन, नर्सिंग विद्यालय, सौर ऊष्मा (सोलर थर्मल) तकनीकी आदि सभी काम होते थे। मुझे वहाँ अच्छा लगा तो मैं रोज़ वहीं जाने लगा। तभी बारहवीं कक्षा का नतीजा आया और मैं लगभग सभी विषयों में फ़ेल हो गया। घर पर बहुत डाँट पड़ी, फिर मुझे दसवीं कक्षा के आधार पर मैकेनिकल डिप्लोमा कोर्स में भर्ती करवा दिया गया। दो साल तक परिवार के लोग मुझे नज़र क़ैद रखना चाहते थे, जिससे मैं कम-से-कम डिप्लोमा तो ख़त्म कर लूँ। इससे

मुझे अवसाद हो गया। अन्ततः परिवार वालों का हृदय परिवर्तन हुआ। उन्होंने मुझे संस्था में काम करने की अनुमति दे दी, और पैसे भी। ये ज़रूर कहा कि मैं कोई कम्प्यूटर का कोर्स कर लूँ।

मेरा अगला प्रोजेक्ट था, मेकर (रचनाकार) प्रयोगशाला। इस प्रयोगशाला में हम अनौपचारिक माहौल में असल ज़िन्दगी की परेशानियों के हल ढूँढ़ते थे। इसमें हम विज्ञान, तकनीकी, गणित और सामाजिक विज्ञान को भी समझते थे। जैसे– हॉस्टल में जिन जगहों पर बिजली नहीं रहती, उस जगह के लिए बच्चों ने मिलकर एक टॉर्च बनाई। चुम्बक के प्रयोग से चूहे बिल्ली का खेल बनाया। मौसम का एक स्टेशन भी बनाया।

साथ ही मैंने *समर हिल, तोत्तो-चान* और *दिवास्वप्न, स्कूल में आज तुमने भला क्या पूछा?* जैसी किताबें भी पढ़ीं। इसी दौरान मेरी पहचान एक ऐसे व्यक्ति से हुई जो एक प्राथमिक विद्यालय की समिति के सदस्य थे। उन्होंने मुझे अपने विद्यालय में बच्चों के साथ अलग-अलग शिक्षण विधियों का प्रयोग करने की अनुमति दी। यहाँ काफ़ी बच्चे किसान परिवारों से थे, हमने वर्मी कम्पोस्ट बनाने का काम शुरू किया। तैयार वर्मी कम्पोस्ट को हम बेचने भी लगे। इससे हुई आय से हमारी प्रयोगशाला का ख़र्चा निकलने लगा, और काफ़ी आत्मनिर्भरता आ गई।

इस दौरान मुझे अलग-अलग स्कूलों में, जहाँ वैकल्पिक शिक्षा के माध्यम से पढ़ाया जाता था, जाने का मौक़ा मिला। वहाँ सूक्ष्म अवलोकन और चर्चाओं से मेरे विचार और समझ बदलने लगी। शिक्षा के मूल उद्देश्य क्या हैं और देश के अलग-अलग कोनों में इन उद्देश्यों को कैसे क्रियान्वित किया गया है, यह देखने-समझने का मौक़ा मुझे मिला।

सवाल : आप जिस स्कूल के साथ जुड़े हैं, उसकी व्यवस्था कैसी है?

मिहिर : मैं अभी भुज में स्थित 'शिशुकुंज' नाम के विद्यालय में काम कर रहा हूँ। स्कूल के काम के उपरान्त मैं अन्य स्कूलों में शिक्षक, बच्चों और कभी-कभी अभिभावकों के साथ विविध विषयों पर कार्यशाला करता रहता हूँ।

मैं जिस स्कूल से जुड़ा हूँ वहाँ मुख्याध्यापक और शिक्षक समान्तर स्तर पर हैं। स्कूल प्रबन्धन की कोशिश रहती है कि शिक्षक ही स्कूल चलाएँ। वे शिक्षकों को स्वतंत्रता देना चाहते हैं। स्कूल केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद से जुड़ा है इसलिए हमें पाठ्यक्रम पूरा करना पड़ता है। पर हमें शिक्षण पद्धतियों को चुनने की पूरी स्वतंत्रता है।

सवाल : पिछले कुछ सालों में आपके द्वारा किए गए सफल हुए कुछ प्रयोग के बारे में बताएँ?

मिहिर : मैं धर्मपुर में कक्षा एक के बच्चों के साथ काम करता था। वहाँ पर सम्पूर्ण भाषा पद्धति पर एक कार्यक्रम किया जो दो साल चला। यहाँ के बच्चे 'कुकना' नाम की बोली बोलते हैं, जो मराठी से काफ़ी मिलती जुलती है और पढ़ाई गुजराती में होती है। गुजराती उनके लिए एक विदेशी भाषा के समान है।

उनकी बोली को स्वीकार करते हुए, गुजराती के मूलाक्षर और व्याकरण पर ज़्यादा ज़ोर दिए बिना मैंने, मज़ेदार तरीक़े से गुजराती कैसे सीख सकते हैं, इसपर काम किया और सम्पूर्ण भाषा पद्धति के सभी मानकों को ध्यान में रखते हुए बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाया और उसमें काफ़ी हद तक सफल रहा। इसमें कुछ ऐसे काम शामिल थे : कोई कहानी सुनाई, उसका नाटक किया और फिर उसमें उपयोग किए गए शब्दों को फ़्लैश कार्ड की मदद से पढ़ना सीखा। बच्चे शब्दों से परिचित हैं। ये शब्द उनके लिए अर्थपूर्ण हैं इसीलिए वो उसे चित्र की तरह याद रख लेते हैं, आगे इसी तरह वाक्य पढ़ना सीखते हैं। आगे इन शब्दों को तोड़कर मूलाक्षर भी सिखाए जाते हैं। अपने आसपास से कुछ शब्द चुनकर उन्हें ऐसे इस्तेमाल करना कि मुहावरा बन जाए। उदाहरण के तौर पर, 'यहाँ मैस में अण्डे उबल रहे हैं और वहाँ शिक्षक

महोदय उबल रहे हैं'। सरल शब्दों में कहें तो सम्पूर्ण भाषा पद्धति के समर्थक यह मानते हैं कि भाषा को अक्षरों और उनके सम्मिश्रण में नहीं बाँटा जाना चाहिए, और न ही डीकोड करना चाहिए। मिहिर मानते हैं कि भाषा अर्थ बनाने की एक जटिल व्यवस्था है, जहाँ शब्द दूसरे शब्दों के साथ मिलकर एक सन्दर्भ में अर्थ बनाते हैं। भाषा सीखने की इस पद्धति से जैसे मेरी कक्षा के बच्चे सीख पाए, उससे मैं सन्तुष्ट हूँ।

सवाल : आपने बताया कि आप कक्षा एक से चार के शिक्षक हैं। इस साल आप पढ़ाने के और क्या नए प्रयोग कर रहे हैं ?

मिहिर : मैं अभी कक्षा एक से चार में गणित के मुख्य शिक्षक के साथ कक्षा की योजना बनाने में मदद करता हूँ। कक्षा एक में हिन्दी में कहानियाँ सुनाता हूँ और नाटक करवाता हूँ, और कक्षा तीन में गुजराती पढ़ाता हूँ। मैं कक्षा 5 से 9 में कम्प्यूटर सिखाता हूँ जिसमें प्रोग्रामिंग, एनिमेशन बनाना शामिल है। एक और साथी शिक्षक के साथ मैं कक्षा 5 से 9 में इको बडी क्लब चलाता हूँ, जहाँ हम प्रकृति में सैर, सफ़ाई अभियान, प्लास्टिक का पुन: इस्तेमाल और गत्ते से फ़र्नीचर बनाने का काम करते हैं। हमने अपने आसपास के बग़ीचों में पुस्तकालय भी शुरू किए हैं। हर रविवार हम थैला भरकर किताबें ले जाते हैं। बच्चे अपनी उम्र और रुचि के अनुसार रंगीन किताबें पढ़ते हैं और कहानियाँ सुनते हैं।

सवाल : इको बडी क्लब के बारे में और बताएँ।

मिहिर : इको बडी क्लब का मुख्य प्रयास है कि प्रकृति के साथ बच्चों का एक घनिष्ठ रिश्ता बन पाए। मेरे साथ इस क्लब में एक साथी शिक्षक हैं ऋतविद भाई— जो पहले विदेश में मोटर इंजीनियर का काम करते थे। इको बडी क्लब में हम अलग-अलग गतिविधियाँ करते हैं। इनमें से एक है— प्रकृति की सैर, जिसका विषय हम बदलते रहते हैं। कभी बिलकुल शान्त सैर, कभी खुले पैर सैर, कभी केवल पत्तियों पर ध्यान रखना, या कभी यह ध्यान देना कि हमारे आसपास 'जीवन' कहाँ-कहाँ और किस-किस रूप में है। इस समय हम बच्चों को तस्वीरें लेने को भी कहते हैं। सैर के दौरान या उसके तुरन्त बाद यह भी चर्चा करते हैं कि कौन-कौन से पेड़-पौधे यहाँ उगते हैं और कौन-से जानवर यहाँ पाए जाते हैं। ये यहाँ ही क्यूँ पाए जाते हैं? इनका क्या उद्देश्य है? इन सबमें आपस में क्या सम्बन्ध है?

इस साल हमने बच्चों के साथ मिलकर किचन गार्डन भी शुरू किया है, जिसमें मूली, मेथी, पालक जैसे पौधे उगाए हैं। ऐसे पौधे जिनका सीधा उपयोग नाश्ते में हो सके। बच्चे किचन गार्डन में बीज डालने से लेकर कटाई की प्रक्रिया तक साथ रहते हैं। यह अनुभव बच्चों को 'फ़ार्म टू प्लेट' की यात्रा पर ले जाता है।

ऐसी यात्राओं में हम पर्यावरण को विविध दृष्टिकोणों से समझने की कोशिश करते हैं— पर्यावरण अर्थव्यवस्था से कैसे जुड़ा है, इंसानों पर कैसे प्रभाव डालता है, खाने-पीने से कैसे जुड़ा है? इस क्लब में हम अकसर रचनात्मक लेखन करते हैं, प्रकृति से जुड़े गीत गाते हैं और वृत्तचित्र भी देखते हैं, जिसमें अलग-अलग वस्तुओं की कहानी पर चर्चा करते हैं।

हम प्लास्टिक को पुनः इस्तेमाल करने की कोशिश भी करते हैं। बच्चे अपने घर से कुछ कुछ प्लास्टिक का सामान लाते हैं, जिससे हम नई वस्तुएँ बनाने की कोशिश करते हैं। पिछली बार हमने प्लास्टिक के छिलकों से बुकमार्क, बुक कवर और तकिए बनाए। बच्चे स्वयं ही नए-नए विचार सामने लाते हैं, जिनपर फिर हम आगे काम करते हैं। प्लास्टिक की खाली बोतलों से बोतल ईंटें बनाईं। प्लास्टिक की बनी बाल पेन जिसमें रीफ़िल नहीं डाल सकते उनका उपयोग करके चीज़ें बनाना। ऐसी काफ़ी सारी चीज़ें कचरे से बनाते हैं।

इसके अलावा हम और भी काम कर रहे हैं, जैसे— कैम्पस में बाग़ के लिए ड्रिप सिंचाई, पानी के कुल इस्तेमाल का हिसाब-किताब रखना,

पानी के कम इस्तेमाल के लिए रोज़ाना की आदतों को कैसे बदला जाए, पर्यटन का क्या स्वरूप हो सकता है? आदि।

भुज के आसपास ऐसी जगहें जो ज़्यादा जानी पहचानी न हों, वहाँ हम लोग साइकिल चलाकर पिकनिक मनाने जाते हैं, वहाँ की साफ़-सफ़ाई करते हैं। कुछ बच्चे लोकल कार पूलिंग एप डेवलप करने का, तो कई बच्चे इलेक्ट्रॉनिक स्कूटर बनाने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे मेल से पर्यावरण से दोस्ती होती ही है पर साथ ही, शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच रिश्ता सुदृढ़ होता है। इको बडी क्लब में फ़िल्म बनाने की कार्यशालाएँ भी हमने स्कूलों में की हैं।

सवाल : फ़िल्म वाली कक्षा में क्या–क्या होता है? इस कक्षा में बच्चों से आपको क्या प्रतिक्रियाएँ मिल रही हैं?

मिहिर : फ़िल्म वाली कक्षा हमने स्कूल में शुरू की। हमने 5-6 लघु फ़िल्मों का चयन किया। और फ़िल्म के आसपास चर्चा, सवाल जवाब और रचनात्मक लेखन करने लगे। या फ़िल्म को बीच में ही रोककर, बच्चों से कहते हैं कि वे उसके एक नए अन्त की कल्पना करें और लिखें। इन फ़िल्मों में हम सिर्फ़ जानकारी के बारे में ही नहीं, बल्कि भावनात्मक पहलुओं पर भी बात करते हैं। सामाजिक बदलाव के बारे में सवाल भी पूछते हैं। हमारे विचारों और व्यवहार में छिपी रूढ़िवादी धारणाओं को भी कुरेदते हैं। उदाहरण के लिए, सत्यजीत रे की लघु फ़िल्म टू देखकर हमने अमीरी और ग़रीबी पर चर्चा की, साथ ही यह भी कि जब बच्चे एक दूसरे पर धौंस दिखाते हैं (बुली करते हैं) तो कैसा महसूस होता है? जैसे– लघु फ़िल्म को देखकर जेंडर रोल के बारे में भी चर्चा की कि 'क्यों आज भी यही अपेक्षा रहती है, क्यों लड़कियाँ ही घर का काम करती हैं?' कुछ इस तरह की फ़िल्में भी देखीं जिनमें पुरुष घर के काम करते हैं।

सवाल : आपको बच्चों के साथ काम करने में फ़िल्में ज़रूरी क्यों लगती हैं?

मिहिर : दरअसल, फ़िल्में ज़िन्दगी और समग्रता से परिपूर्ण होती हैं। हम फ़िल्म के एक ही टुकड़े से कितने विषयों पर खोजबीन कर पाते हैं। बच्चों को फ़िल्में अच्छी लगती हैं, वे उसके पात्रों से सम्बन्ध बना पाते हैं। फ़िल्में बच्चों से बातचीत शुरू करने का यह एक अच्छा ज़रिया है। बच्चों में संवेदनशीलता विकसित करना, रूढ़िवादी धारणाएँ तोड़ना, बच्चे अपने जीवन से ज़्यादा जुड़ पाएँ और ज़िन्दगी जैसी है उसे वैसे देख पाएँ, यही इसका उद्देश्य है।

सवाल : अपने कम्प्यूटर सिखाने के प्रयोग के बारे में बताएँ?

मिहिर : मेरी कोशिश है कि आजकल के बच्चे कम्प्यूटर के केवल उपभोक्ता न रहें, बल्कि नया सॉफ़्टवेयर बना पाएँ, जैसे– टिंकर प्रयोगशाला (एक तरह की कार्यशाला जहाँ अलग-अलग वस्तुएँ रहती हैं, और बच्चे अलग-अलग सामग्री का निर्माण कर पाते हैं)।

मैंने बच्चों के साथ कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग को लेकर काम किया। मैंने उन्हें प्रोग्रामिंग भाषा सिखाई जिससे उनमें क्रमिक और तार्किक सोच, रचनात्मकता, भाषा का इस्तेमाल– इन सभी का विकास हुआ। जैसे, अगर वे एक कहानी सुनाना चाहते हैं जिसका एक पात्र है बिल्ली, उसका एनिमेशन बनाएँ। शुरू में बच्चों को मदद की ज़रूरत रहती है। उन्हें मैं छोटे-छोटे काम करने को कहता हूँ। जैसे– बिल्ली को दस क़दम आगे लेकर जाएँ। बच्चे एक दूसरे की मदद से प्रोग्रामिंग भाषा का उपयोग करना जल्दी ही सीख जाते हैं।

अलग-अलग और अजीब-सी वस्तुओं से भी मैं उनसे सर्किट बनाने की कोशिश करवाता हूँ। जैसे– केले के इस्तेमाल से सर्किट बनाना। हम केले को कम्प्यूटर के सर्किट से ऐसे जोड़ सकते हैं कि केला किसी ख़ास काम में आए, जैसे– कीबोर्ड में 'स्पेस बार' का। टाइप करते समय जब भी स्पेस बार दबाना हो तो उसकी बजाय सर्किट में केला पकड़ लें। या रोज़ाना के इस्तेमाल की वस्तुएँ– जैसे अगर नल ज़्यादा देर तक चालू है तो सर्किट में अलार्म बजेगा। ऐसा करने से अलग तरह की मानसिक क्षमताओं का विकास हो पाता है।

सवाल : आपने एक बार मुहावरे बनाने की बात की थी। उसके बारे में बताएँ ? इससे बच्चों के संज्ञान में क्या फ़र्क़ पड़ता है ?

मिहिर : इस तरह के काम हम भाषा की कक्षा में करते हैं। विविध विषयों की शब्दावली का सामान्य जीवन की घटनाओं में उपयोग करना। उदाहरण के लिए, हम बच्चों से प्यार भरी चिट्ठियाँ लिखवाते हैं। अगर आप डॉक्टर हो तो कैसा लिखोगे? वैज्ञानिक हो तो कैसा लिखोगे? इसी तरह से बच्चे 'चाय बनाने की पद्धति वैज्ञानिक तरीक़े से लिखो, एक कवि की तरह लिखो'। इस तरह की गतिविधियों से बच्चों के संज्ञान में क्या फ़र्क़ पड़ता है। इस क्षेत्र में मैं आगे खोजबीन करने की कोशिश कर रहा हूँ।

सवाल : अपने लाइब्रेरी प्रोजेक्ट के बारे में कुछ बताएँ।

मिहिर : मानसून के कारण लाइब्रेरी प्रोजेक्ट का काम बन्द था अब फिर से शुरू करेंगे। अब कहानियाँ सुनाने पर ज़्यादा ज़ोर देना है, ऐसा सोचा है। एक क्लब जैसा शुरू करने का इरादा है जिसमें भाषा कौशल, विचारशीलता और संवेदनशीलता पर फ़िल्म, नाटक, कहानी जैसे माध्यम से काम हो।

सभी चीज़ों– जिसमें शिक्षा शामिल है– के मूल में मानव चेतना है। काफ़ी विचारकों ने इसके बारे में बात भी की है।

सवाल : आपका अपना संश्लेषण क्या बना है इस विषय में ?

मिहिर : यह बहुत गहरा सवाल है। पर बेहद मूल और महत्त्वपूर्ण भी। मानव चेतना और मानव चेतना का शिक्षण यानी 'संवेदनशीलता' या फिर 'प्रज्ञा' का शिक्षण। जीवन बेहद गहरी तरह से चीज़ों और जीवों से जुड़ा हुआ है। आज स्कूलों में सिर्फ़ मस्तिष्क की क्षमताओं का विकास करने की दौड़ लगी है। सिर्फ़ मस्तिष्क की शक्तियों का विकास जीवन के एक ही टुकड़े को दिखाती है। विश्वभर में आज जो युद्ध और पर्यावरणीय संकट की समस्याएँ दिख रही हैं, उसके पीछे मुझे संवेदनशीलता का अभाव लगता है। अगर स्कूलों में जीवन को समग्र तरीक़े से देखने की तालीम दी जाए तो यह बहुत महत्त्वपूर्ण काम होगा।

सवाल : आपकी शिक्षा प्रणाली अलग है। इससे कहीं स्कूली व्यवस्था के साथ, या अन्य शिक्षकों के साथ कभी मतभेद नहीं होता ?

मिहिर : हाँ, कभी-कभी हमारे विचारों में टकराव होता है। लेकिन मेरी कोशिश रहती है कि बातचीत से मसले सुलझ जाएँ।

सवाल : बच्चों के साथ, बतौर शिक्षक आप किस तरह का सम्बन्ध बनाते हैं ?

मिहिर : बच्चों के साथ मेरा सम्बन्ध एक दोस्त जैसा है। बच्चों को कक्षा कक्ष में कोई भय नहीं होता, मुझे कभी-कभी बच्चों पर ग़ुस्सा आ जाता है। मैं कभी-कभी एक बच्चे की तुलना दूसरे बच्चे से कर देता हूँ, पर मेरी कोशिश यही रहती है कि स्पर्धा और तुलना न हो, इनाम और सज़ा भी नहीं हो।

सवाल : आपकी शिक्षा प्रणाली को लेकर बच्चों की क्या प्रतिक्रिया रहती है ?

मिहिर : मुझे लगता है कि बच्चे मेरे साथ रहना पसन्द करते हैं। कभी-कभी वे कहते हैं कि "आप हमसे ग़ुस्सा नहीं होते इसलिए हम ज़्यादा अच्छे-से नहीं सीखते हैं"। लेकिन हमारे बीच में जो दोस्ती है, मेरी समझ से उससे कुछ जादू-सा होता है और बच्चे सीखते हैं।

सवाल : बच्चों के साथ पढ़ाते समय अनुशासन के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

मिहिर : यह तो काफ़ी मुश्किल सवाल है। इस मामले में मुझे तीन बातें अहम लगती हैं– पहली यह, कि एक शिक्षक का बच्चों के साथ दोस्ताना व्यवहार होना चाहिए; दूसरी, बच्चों के साथ काम करते समय सीखने के उद्देश्य सटीक होने चाहिए; और तीसरी, एक शिक्षक

को यह जानना ज़रूरी है कि बच्चे कैसे सीखते हैं। इसी हिसाब से गतिविधि की योजना बनानी चाहिए। कक्षा-कक्ष में शिक्षक दस मिनट से ज़्यादा बोले और बच्चे सिर्फ़ सुनें, ऐसा नहीं होना चाहिए।

सवाल : इन रास्तों को चुन लेने के पीछे आपकी क्या सोच है ?

मिहिर : मैं समझता हूँ कि बच्चे जिस माहौल में बड़े होते हैं उसे हम नहीं बदल सकते, लेकिन हम सीखने के मौक़े और अनुभव प्रदान कर सकते हैं। इससे बच्चों में ऐसी प्रवृत्ति पनप सकती है जहाँ वे ये फ़ैसला ले पाएँ कि उनके लिए ज़िन्दगी में क्या सही है और क्या ग़लत।

हमें बच्चों पर अपने विचार और मान्यताएँ थोपने नहीं चाहिए। बच्चे को अलग-अलग मान्यताओं और विचारों से अवगत करना चाहिए जिससे उन्हें मौक़े मिल पाएँ जहाँ वे अपनी स्वतंत्र समझ विकसित कर पाएँ। ऐसे माहौल में बच्चे संवेदनशील, सृजनशील व्यक्ति की तरह पनप सकते हैं। साथ ही उनमें सवाल पूछने की क्षमता, समाजशीलता और अपने मूल स्वभाव को जानने और समझने की क्षमताएँ भी विकसित होती हैं। बच्चों में ये सभी कौशल विकसित हों, इसके लिए पर्याप्त मौक़े उपलब्ध कराने के लिए हमें प्रयासरत रहना चाहिए। मैं यह भी समझता हूँ कि ऐसे माहौल में, बच्चे ये समझ पाते हैं कि असल में स्वतंत्रता के मायने क्या हैं। वे स्वतंत्रता की अपनी समझ के साथ प्रयोग करते रहते हैं, जो हमेशा विकसित होती रहती है।

मैंने शिक्षक बनने के लिए ये रास्ते चुने हैं, ऐसा मैं नहीं कह सकता। क्योंकि शिक्षक ही बनना है, ऐसा तय नहीं था। मैं अभी शिक्षक का काम कर रहा हूँ इसके पीछे तीन मुख्य कारण हैं। पहला, मेरी माँ बच्चों के साथ काम करती है इसीलिए मैंने बचपन से बच्चों के साथ थोड़ा-थोड़ा काम किया है और मुझे उसमें सबसे ज़्यादा आनन्द मिलता है; दूसरा, मुझे बच्चों के साथ काम करते वक़्त नाटक, कविता, विज्ञान के प्रयोग, फ़िल्म बनाना जैसे सृजनात्मक माध्यम में अन्वेषण करने का मौक़ा मिलता है जो मुझे बहुत भाता है; और तीसरा, कुछ बड़े सवाल भी हैं जो इन रास्तों के चुनाव के पीछे हैं। जैसे कि मानव विकास क्या है? मानव जीवन का लक्ष्य क्या है? मानव चेतना के स्तर क्या हैं जिसमें सबसे पहले मानव अपनी इन्द्रियों के लिए ही कार्य करता है। कुछ स्तरों में वो उससे आगे बढ़कर संवेदनशील बनता है– शायद आप मैस्लो की हाइरार्की से ज़्यादा सम्बन्ध बना पाएँ। मूल खोज मानव विकास और शिक्षण की भूमिका को समझने की है। क्या शिक्षण से चेतना का नया स्तर पाया जा सकता है? आज जो वातावरण बदलाव की बात हो रही है, या हिंसा, मानव अधिकार के हनन की बात ही हो, इन सभी प्रश्नों और मुद्दों के मूल में मानव चेतना है। मानव का मन है। क्या शिक्षा के द्वारा 'संवेदनशीलता' (यहाँ संवेदनशीलता का अर्थ कृष्णमूर्ति के विचारों के सन्दर्भ में समझता हूँ) को विकसित किया जा सकता है? अगर हाँ, तो किस तरह?

बेहतर शिक्षक बनने के लिए अभी तो मैं शिक्षा और बच्चों के बारे में लगातार पढ़ाई करता रहता हूँ। अभी जे कृष्णामूर्ति और विमला ताई के विचार पढ़ रहा हूँ। इसके साथ-साथ, मैं अपने शिक्षक मित्रों से बातचीत, अपने मेंटर से बातचीत और अपने कक्षा कार्य पर चिन्तन-मनन करता हूँ।

नोट : लेख के छपने के समय मिहिर एमआईटी मीडिया लैब के लाइफ़लॉन्ग किंडरगार्टेन शोध समूह के साथ शोध में जुड़े हैं। इस शोध के प्रश्न हैं : 'क्या व्हॉट्सएप जैसे माध्यम से विद्यार्थियों के लिए मेकिंग / टिंकरिंग की प्रक्रिया सुगम बनाई जा सकती है? क्या मेकिंग / टिंकरिंग की प्रक्रिया के लिखित प्रमाण के लिए कोई उपकरण बनाए जा सकते हैं?'

निधि गुलाटी पिछले दो दशक से शिक्षा एवं समाज के क्षेत्र में सक्रिय हैं । वर्तमान में इंस्टीट्यूट ऑफ़ होम इकनोमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय में एलीमेंट्री एजुकेशन डिपार्टमेंट में बतौर प्राध्यापक कार्यरत हैं।

सम्पर्क : nidhi.a.gulati@gmail.com